International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2022; 2(1): 64-68
www.educationjournal.info
Received: 12-11-2021
Accepted: 18-01-2022

मोनिका रानी
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, थैड गांव, शिव नगर, पोखरा, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

डॉ० नवीनता रानी
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, थैड गांव, शिव नगर,पोखरा, पौड़ीगढ़वाल उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author:
मोनिका रानी
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, थैड गांव, शिव नगर, पोखरा, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानवदर्शन एवं वर्तमान योजनाओं में योगदान

मोनिका रानी और डॉ० नवीनता रानी

सारांश
पं० दीनदयाल उपाध्याय भारत के सबसे ओजस्वी, तपसी एवं कीर्तिवान चिंतक रहे हैं। उनके चिंतन के मूल में लोकमंगल एवं राष्ट्र कल्याण का भाव समाविष्ट है। उन्होंने राष्ट्र को धर्म– कर्म, आत्मा–संबद्ध, एवं सभ्यता का सनातन पुंज बताते हुए राजनीति की नई व्याख्या को प्रतिपादित किया ।
उनकी यह मान्यता थी कि यह तथ्य आधारित बोध, सनातन काल से चला आ रहा है। राष्ट्र, समय और दशा के अनुसार उसके अभिव्यक्त आकृति में कुछ अंतर दिखाई अवश्य दे सकता है, किंतु उससे कोई नवीन ज्ञान आविर्भूत नहीं होता।
भारत में स्वतंत्रता से पूर्व जितने भी आंदोलन हुए उसका एक ही लक्ष्य था–स्वतंत्रता की प्राप्ति अर्थात आंग्लदेशी के बर्बर पंजों से मां भारती की आजादी।
स्वराज्य के उपरांत हमारी दिशा क्या होगी, हम किस मार्ग से अपने जीवन की सार्थकता का श्रेष्ठतम रूप प्राप्त कर सकेंगे, कौन सा ऐसा विचार होगा जो हमारे एकत्रीकृत परिमार्जन में सहायक सिद्ध होगा, किस सिद्धांत का विवेचन कर हम व्यष्टि से समष्टि के रूप में अपनी खोई हुई गरिमा को प्राप्त कर सकेंगे।
एक विचारणीय परन्तु महत्वपूर्ण तथ्य कि क्या होगा यदि यह दर्शन जिसके माध्यम से हम अर्वाचीन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रेरित हो एवं साथ ही अपनी महान सभ्यता को भी अविकल रख सकें। इसका अधिक विचार नहीं किया गया।

मूल शब्द–पं० दीनदयाल उपाध्याय, मानवदर्शन, सूक्ष्म– व्यापक समन्वय, वर्तमान योजनाएं।

प्रस्तावना
मानवदर्शन एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे पं० दीनदयाल उपाध्याय जी ने राष्ट्र और संसार के समक्ष इसे जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया।
वे आरंभ से ही विकेंद्रीकरण पद्धति के पक्षधर थे। वे सम्पूर्ण सामाजिक क्षेत्रों के राष्ट्रीयकरण के खिलाफ थे, जिनका राष्ट्रीयकरण तत्साम्यिक कांग्रेस सरकारों द्वारा धड़ल्ले से किया जा रहा था। वे जानते थे कि यह प्रान्त परिश्रमी लोगों का है जो अपनी मौलिक अनिवार्यता के लिए राज्य पर निर्भर कभी नहीं रहे हैं। लेकिन समाजवादी सिद्धांतो से प्रभावित कांग्रेस की सरकारों ने सत्ता की शक्ति का मंडल (वृत्त) बढ़ाने की होड़ में समाज की शक्ति को राष्ट्रीयकरण के बूते पर अपने शिकंजे में ले लिया। शिक्षा जैसी बात, जिसके सरकारीकरण का दीनदयाल जी ने प्रतिरोध किया है, उसका भी पूर्णतया सरकारीकरण कर दिया गया।

उद्देश्य
- भारतीय संस्कृति एवं मानवीय प्रवृत्तियों के विचारों का विवेचन।
- समष्टि, व्यष्टि व परमिष्ट से स्वतन्त्र सत्ताओं की अभिव्यक्ति का विवेचन।
- वर्तमान योजनाओं का विवेचन।

परिकल्पनाएं
- इससे भारत के समक्ष एक स्पष्ट और उदान्त लक्ष्य प्रस्तुत होगा।

- विश्व का ज्ञान और भारतीय सभ्यता के आधार पर हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जो हमारे पूर्वजों की सोच के अनुसार अत्यधिक गौरवशाली व प्रभावशाली बनेगा।
- भारतीय संस्कृति पर आधारित एकात्मकता का साक्षात्कार कर 'नर से नारायण' बनने में समर्थ हो जाएगा।

एकात्म मानवदर्शन

एकात्म विचार दर्शन का सिद्धान्त न केवल संपूर्ण संस्कृति, उद्भव या सभ्यता के साथ किया गया एक ऐसा सुधारात्मक रूप है जो वास्तव में समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में तथा व्यक्ति के विकास में एकीकृत उन्नत दर्शन को भी प्रस्तुत करता है ।

एकात्म मानवदर्शन इस शास्त्रीय अवधारणा पर आधारित है कि व्यक्ति मन, बुद्धि, आत्मा एवं शरीर का एक सम्मिश्रण है। पाश्चात्य विचारों की निरर्थकता यही से परिलक्षित होती है कि मानव के इस अलग-अलग हिस्से का टुकड़े-टुकड़े के रूप में विचार करती है।

अध्ययन–अध्यापन जैसी बात जिसके सरकारीकरण का दीनदयाल जी ने पुरजोर प्रतिरोध किया है, उसका भी पूर्णतया सरकारीकरण कर दिया गया। आज सरकारी स्कूलों की हालत क्या है? किसी से छिपी नहीं है। शिक्षण करने का कार्य शासन के हाथों में जाना बंदर के हाथ में उस्तरा देने जैसा साबित हुआ है। यह काम संगठन पर छोड़ा जा सकता है, लेकिन समाजवादी नीतियों के अंध उत्साह ने उनकी एक न सुनी।

पं० दीनदयाल उपाध्याय उन्हीं क्षेत्रों में शासन को उतारने के लिए बोल रहे थे जिन क्षेत्रों में संगठन अथवा निजी क्षेत्र जोखिम उठाना नहीं चाहते । लेकिन तत्कालीन सरकारों द्वारा इसके विरुद्ध काम किया गया है।

शरीर, मन, बुद्धि तथा आत्मा

वास्तव में एकात्मता संपूर्णता में ही निहित रहती है।

संपूर्णता के अभाव में खण्ड दृष्टि से मानव सदैव अपने लक्ष्य तक पहुंचने में संघर्षरत रहता है और असफलताओं का शिकार होता रहता है । जैसे ब्रह्मांड की सकलता है, वैसे ही व्यक्ति की संपूर्णता भी अपने आप में महत्व रखती है। व्यक्ति अर्थात् केवल काया नहीं, उसके पास अंतःकरण है, बुद्धि है, जीवात्मा भी है। यदि इन चारों में से एक की भी उपेक्षा हो जाए तो व्यक्ति का सुख अंगहीन हो जायेगा। इन चारों के भिन्न– भिन्न सुख से व्यक्ति सुखी नहीं होता, उसे तो एकात्म एवं प्रगाढ़ सुख चाहिए जिसे हर्ष और आनंदमय जीवन की उपलब्धि के रूप में प्रतिपादित किया जा सकता है।

पंडित जी का यह दर्शन अपनी समग्रता में मानव जीवन को संतुलित, सुखी ,संपन्न व सुखदायक बनाने का सूत्र प्रस्तुत करने में पूर्णतया सामर्थ्य रखता है। इसमें संयमित व्यवहार, अर्थायाम, अंत्योदय, सृष्टि, व्यष्टि, समष्टि, परमेष्ठी एवं सामर्थ्य चतुष्ट्या जैसे अनेक सूत्रों का भी समाहित किया गया है। इकाई, सूक्ष्म, सृजन और परमेष्टि की एकात्मता और शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के परिमार्जन की चिंता उनका मूल ध्येय है। वर्तमान समय में पश्चिमी विचारधाराओं में मानव– मात्र को टुकड़ों में बांटकर देखने की पद्धति अपनायी गई है। अतः यह सम्यक् मूल्यांकन का कोई अवकाश नहीं होता।

- वे पश्चिमी समाज की त्रासदी रूप की स्थितियों से अनभिज्ञ थे। वे लिखते हैं–" व्यष्टि, समष्टि के बीच संघर्ष की कल्पना कर दोनों में से किसी एक को प्रमुख एवं संपूर्ण क्रियाओं का अंतिम लक्ष्य मानकर पश्चिम में अनेक विचारधाराओं का जन्म हुआ है किंतु दृश्य व्यक्ति अदृश्य समष्टि का भी प्रतिनिधित्व करता है। अहं के साथ वयं की सत्ता भी प्रत्येक अहं के द्वारा जीती भी है। प्रत्येक 'इकाई' में समुदाय की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। व्यक्ति ही समष्टि के उपकरण हैं, उसके ज्ञान तंतु हैं।"

इस प्रकार दीनदयाल जी ने इकाई एवं सूक्ष्मता के बीच के समीकरण को भी स्पष्ट किया है । साथ ही मानव जाति की विपदाग्रस्त स्थितियों को भी सामने रखा। पश्चिम के समाज में मनुष्य के जीवन की दुखांत स्थिति का कारण भी यह है कि वहां व्यष्टि एवं समष्टि, ज्ञान एवं क्रिया के बीच संतुलन को महत्व नहीं दिया गया है। यही कारण है कि विकसित होने के बाद भी वहां के व्यक्ति सामूहिक जीवन स्तर पर अस्थिरता की स्थिति को लगातार अपने समाज में झेल रहे है।

वे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के सूत्र को स्पष्ट करते हुए कहते हैं –"व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का समुच्चय है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में चारों का ध्यान रखना होगा। चारों की भूख मिटाए बिना व्यक्ति न तो सुख का अनुभव एवं अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति आवश्यक है। आजीविका के साधन, शांति, ज्ञान एवं तादाम्य भाव से ही यह भूखे मिटती हैं। सर्वांगीण विकास की कामना ही व्यक्ति को समाज हित में कार्य की प्रेरणा देती है।"

अतः एकात्म मानव दर्शन, व्यक्तिगत जीवन का सभी अंगों को ध्यान में रखते हुए एक संकलित विचारधारा को इंगित करता है। वास्तव में प्राणी शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संकलित स्वरूप है। इसलिए मानव का सर्वांगीण विकास उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा आधारित एक संकलित विचार है।

व्यक्तिवाद का खंडन

आज राष्ट्र को चार बातों की आवश्यकता रहती है जो विचार करने योग्य हैं—

- प्रथम आवश्यकता है– देश
- दूसरी आवश्यकता है– पृथ्वी
- तीसरी आवश्यकता है– लोक या जन
- चौथी आवश्यकता है- जीवन-आदर्श

देश, पृथ्वी और लोक, दोनों को मिलाकर बनता है। केवल भूमि ही देश नहीं। किसी भूमि पर एक जन (समाज) रहता हो और वह उस भूमि को मां के रूप में पूज्य समझे , तभी वह देश कहलाता है, जैसे दक्षिणी ध्रुव में कोई नहीं रहता, तो वह देश नहीं है किंतु भारत में हम रहते हैं और हम इसे मां

मानते हैं और भारत माता कह कर पुकारते हैं। इसलिए यह देश है।
दूसरी आवश्यकता है –जिंदगी का संकल्प अर्थात मनुष्य जीवन किस लिए प्राप्त हुआ है और उसकी सार्थकता क्या है?
ऐसे बहुत से व्यक्तिगत स्तर पर संकल्प को समझने और समाज में स्थापित करने का जो दृष्टिकोण पंडित दीनदयाल जी द्वारा हम सभी को देने का प्रयास किया गया है। इस तथ्य को अति गहनता से समझते हुए समाज में प्रसारित करने का प्रयास अवश्य ही करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति जो लोककल्याण हेतु कार्य करना चाहते हैं, उन्हें इस आवश्यकता पर भी बल देना चाहिए और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को मानव जीवन जीने के उचित संकल्प की परिभाषा को समझाने का प्रयास करना चाहिए।
तीसरी आवश्यकता है– वह व्यवस्था जिसे नियम या संविधान कह सकते हैं । इसके लिए हमारे यहां सबसे अच्छा शब्द प्रयुक्त हुआ है 'धर्म' । प्रत्येक मनुष्य को धर्म का पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। अतः यह जानना भी अति आवश्यक है कि मानव का स्वधर्म क्या है?

चौथी हैं– जीवन आदर्श अर्थात् सभ्यता या संस्कृति।
उपरोक्त चारों आवश्यकताओं का समुच्चय यानी राष्ट्र।

जब व्यक्ति तथा समाज के मध्य एक सावयव संबंध की आवश्यकता पर बल दिया जाता है तो सामान्य प्रयोजन तथा व्यक्ति विशेष लक्ष्यों के बीच एक संतुलन होना अति आवश्यक है। जहां व्यक्ति विशेष के लक्ष्य का व्यापक सामाजिक वेध्यता के लिए त्याग भी किया जा सकता है। यह एक पूर्ण समाज के निर्माण हेतु परिवार तथा मानवता के महत्व को प्रोत्साहित करता है।

जीवन की पूर्णता चार पुरुषार्थ–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

मनुष्य के जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएं क्या हैं? इनकी आवश्यकता एवं पूर्ति के बीच समरसता स्थापित करना क्यों आवश्यक है? दीनदयाल जी ने ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर भी विचार प्रस्तुत किये है। उनकी दृष्टि में धर्म, अर्थ एवं काम की पूर्ति में इनके संतुलन से परमगति की प्राप्ति ही मनुष्य जीवन की अनिवार्यता है। इनमें से किसी के प्रति भी विशेष आग्रह या असंतुलन व्यक्ति के अस्तित्व को समस्याग्रस्त बना सकता है।
भारतीय दर्शन में जैसा कि भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से गीता में धर्म युद्ध का अनुरोध करते हुए कहा है कि अगर (युद्ध के बाद) जीवित रहे तो पृथ्वी का सुख भोगोगे और यदि वीरगति को प्राप्त हुए तो स्वर्ग का द्वार तुम्हारे लिए खुला मिलेगा। इस तरह यह भारतीय एकात्मवादी दर्शन तो अधिकार की प्राप्ति के लिए धर्मयुद्ध (यदि करना ही पड़े तो) का भी उचित निरूपण करता है। अब यह सवाल पैदा करता है कि हमारी आवश्यकताएं क्या हैं? शास्त्रों में कहा गया है कि

धर्मार्थ काम मोक्षाणां, यस्यै को अपि न विद्यते।
अजागलस्त नस्येव, तस्य जन्म निरर्थकम्।।

भावार्थ –यह है कि धर्म पूर्वक अर्थ का अर्जन कर अपनी कामनाओं की पुष्टि करते हुए मुक्तिरूपी परम पुरूषार्थ को प्राप्त होना ही मानव की आवश्यकताएं हैं, यही उसका लक्ष्य है। इस प्रकार धर्म आधारभूत सामर्थ्य है यहां यह ध्यातव्य है कि धर्म का मतलब मत, मजहब, पंथ या रिलीजन नहीं है। इसका सम्बन्ध केवल मस्जिद और चर्च से नहीं है। मजहब या समाज तो कई हो सकते हैं लेकिन धर्म तो व्यापक है जिस प्रकार अग्नि, पीड़ा निस्पृह निरपेक्ष नहीं रह सकती । उसी प्रकार व्यक्ति भी धर्म निरपेक्ष नहीं रह सकता । वर्तमान में रिलीजन को ही लोगों ने धर्म मान लिया है , अंग्रेजी अनुवाद की बहुत सारी हानियों में से यह सबसे बड़ी हानि है जैसा कि भगवान गीता में उद्घोष करते हैं ये यथा मां प्रपद्यन्ते, तांस्तयैव भजाम्यहम्, जहां जिस रूप में भी भजन करना मजहब या रिलीजन हो सकता है, लेकिन उस ईश्वर में अपने को एकाकार कर आत्मिक सुख प्राप्त करना ही एकमात्र धर्म होगा, जबकि मजहब कई हो सकते हैं।

दीनदयाल जी के अनुसार

"उपनिषद में तो स्पष्ट कहा है कि "नाङ्यमात्मा बलहीनेन लभ्यः "

दुर्बल मनुष्य आत्मा का साक्षात्कार नहीं कर सकता । इसी प्रकार की सूक्ति है कि 'शरीरमाद्यम खलु धर्म साधनम्', अर्थात् –शरीर धर्म का प्रधान संसाधन है। दूसरे लोगों से हमारा यही अंतर है कि उन्होंने शरीर को साध्य माना है परंतु हमने उसे साधन समझा है। इस नाते से हमने शरीर का विचार किया है। जितनी भौतिक अनिवार्यताएं हैं उनकी पूर्ति का महत्व हमने माना है, परंतु उन्हें सर्वस्व नहीं माना। मनुष्य के शरीर मन, बुद्धि एवं आत्मा की आवश्यकताओं की पूर्ति, उसकी विविध इच्छाओं, आकांक्षाओं एवं अभिलाषाओं की संतुष्टि एवं उसके सर्वांगीण विकास की दृष्टि से व्यक्ति के सामने कर्तव्य के रूप में हमारे यहां चतुर्विद्या, पुरूषार्थ की कल्पना रखी गई है।"
अतः स्पष्ट है कि दीनदयाल जी व्यक्ति को केवल शरीर के रूप में देखने के पक्षधर नहीं है। उनके लिए शरीर एक साधन मात्र है, जबकि साध्य है मुक्ति की प्राप्ति। जहां वास्तव में मानव चरम आनंद का अन्तः दर्शन करता है।
वास्तव में इन चारों पुरुषार्थों में दीनदयाल जी 'धर्म' को आधारभूत पुरुषार्थ मानते हैं। 'धर्म' चारों सामर्थ्य में आधारभूत सामर्थ्य इसलिए है, क्योंकि वह उस व्यवस्था को जन्म देता है तो लोकमंगल का प्रबंध करने में सहायक होता है। धर्म का प्रबंध करने में सहायक होता है। धर्म की धारणा व्यक्ति एवं समाज का अभ्युदय करती है।
दीनदयाल जी के चिंतन की पृष्ठभूमि ऐसे महान साहित्य व साहित्यकारों के परीशीलन से निर्मित हुई है। इसलिए वह कहते हैं कि 'धर्म' चारों सामर्थ्यो के आधारभूत पुरुषार्थ है

किंतु वो आगाह भी करते हैं कि धर्म को महत्व देते समय हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि 'अर्थ' के अभाव में धर्म टिक नहीं पाता। इस संदर्भ में पंडित जी -

> "बभुक्षित: किं न करोति पापं क्षीणाम् नरा: निष्करण: भवन्ति "

अर्थ- भूख सब पाप करा सकती है का उदाहरण सामने रखते हैं।

इसके साथ ही वे सावधान करते हैं कि 'अर्थ के प्रभाव' से भी व्यक्ति का पंथ विपदा में पड़ सकता है। 'अर्थ का अभाव' एवं'अर्थ का प्रभाव' दोनों ही धर्म के लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं। यहां 'अर्थ के प्रभाव' को समझना आवश्यक है।

इस प्रकार 'एकात्ममानवदर्शन' में पंडित जी ने 'धर्म' एवं 'अर्थ' के बीच के संबंधों तथा समन्वय को व्याख्यायित किया है। 'अर्थ' द्वारा अनर्थ की संभावनाओं पर गंभीर चिंता की है। 'धर्म' तथा 'अर्थ' के पश्चात 'धर्म' एवं 'काम' के बीच संबंध–सूत्रों व इनके संतुलन–असुंतलन के प्रभावों– दुष्प्रभावों को भी दीनदायाल जी ने इस दर्शन में व्याख्यायित किया है।

सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के निमित्त शेष दो पुरुषार्थों सहित 'काम' रूपी पुरुषार्थ भी उतना ही महत्वपूर्ण है किंतु उनकी दृष्टि में इसका आधार भी धर्म सम्मत होना चाहिए। इन तीनों का सामरस्य एवं समरसता ही चतुर्थ पुरुषार्थ अर्थात् 'मुक्ति' की राह विस्तीरृण करती है। इनके सामंजस्य एवं संतुलन से व्यक्ति अपने जीवन को मंगलप्रद बना सकता है। वहां व्यक्ति कहीं 'धार्मिक' व्यक्ति है तो कहीं 'आर्थिक' कहीं 'कामुक' व्यक्ति है, तो कहीं 'साधक।'

एकात्म मानववाद दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

1. एकात्म मानववाद न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक जनतंत्र एवं स्वतंत्रता को भी बढ़ावा देता है। यह सिद्धांत भिन्नता को प्रोत्साहन देता है। अतः भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है।
2. एकात्म मानववाद का उद्देश्य लोकडाउन के दौरान श्रमिकों के शहरी– ग्रामीण अपगमन एवं जीविकाविहीन, गरीबी जैसी समस्याएं सरकार के समक्ष आयी तो ऐसे समय में लोक कल्याणकारी योजनाओं जैसे– मुफ्त राशन वितरण, किसान सम्मान निधि, दिव्यांग, वृद्ध, विधवा पेंशन आदि के माध्यम से व्यवस्था बनाए रखना, यह साबित करता है कि उपाध्याय जी का दर्शन फलीभूत होता प्रतीत हो रहा है।
3. पं० दीनदयाल उपाध्याय उन्हीं क्षेत्रों में सरकार की हिस्सेदारी की बात करते हैं, जिन क्षेत्रों में समाज अथवा निजी क्षेत्र जोखिम नहीं लेते।
4. भयंकर स्थिति में आने वाले मानव को कभी भी परेशानी नहीं होती है।

वर्तमान योजनाओं में दीनदयाल उपाध्याय की प्रासंगिकता

केन्द्र सरकार द्वारा दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर कई परियोजनाएं चलाई जा रही हैं।

साल 2014 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार में आने के बाद ही पार्टी के संस्थापक रहे दीनदयाल उपाध्याय की समाज के विकास में सहयोगी योजनाओं के रूप में विशेष क्रियान्वयन व प्रचार-प्रसार भी शुरू हो गया है।

2016 और 2017 में भी केंद्र और राज्य सरकारों ने पूरे देश में जनशताब्दी वर्ष बनाया और कई कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। सरकार ने कई योजनाओं के साथ-साथ रेलवे–स्टेशन, पोर्ट, शिक्षण संस्थान आदि के नाम जनसंघ नेता दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर परिवर्तित कर दिए हैं। उनके 102 वें जन्मदिवस पर जानते हैं अभी तक क्या-क्या दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर कर दिया गया है–

1. दीनदयाल अंत्योदय योजना–

दीनदयाल अंत्योदय योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से व्यवसाय के अवसरों में राष्ट्रीय स्तर पर दरिद्रता को कम करना है। दीनदयाल अंत्योदय योजना के आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय (एच० यू० पी० ए०) के तहत शुरू किया गया था। भारत सरकार ने इस योजना के लिए 500 करोड़ रुपए का प्रावधान किया था । वैसे यह योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एन० यू० एल० एम०) का एकीकरण है।

2. दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना

दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना पूरे ग्रामवासी भारत को अनवरुद्ध बिजली की आपूर्ति प्रदान करने के लिए बनाई गई है। यह योजना नवंबर 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में आरंभ की गई है। यह भारत सरकार की प्रमुख पहलों में से एक है और विद्युत मंत्रालय का प्रमुख कार्यक्रम है वैसे यह योजना मौजूदा राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना को प्रतिस्थापित करेगी, लेकिन राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना की सुविधाओं को डी० डी० यू० जे० वाई० की नई योजना में सामवेष्ठित किया गया है।

3. दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना

इस योजना का लक्ष्य ग्रामीण युवाओं को नौकरियों में नियमित रूप से नियमबद्ध रूप से न्यूनतम पारिश्रमिक के बराबर या उससे ऊपर मासिक वेतन प्रदान करने के लक्ष्य से शुरू की गई है। यह ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा ग्रामीण आजीविका मिशन (एन० आर० एल० एम०) का हिस्सा है।

4. दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते कार्यक्रम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यकाल के पहले साल में ही 16 अक्टूबर 2014 को इस कार्यक्रम की शुरुआत की थी। यह राष्ट्र में उद्योग संबंधी विकास हेतु अनुकूल माहौल तैयार करने और श्रमजीवी की दशा सुधारने के लिए शुरू किया गया था। इस योजना के तहत भविष्य निधि के सभी

सदस्यों को यूनिवर्सल अकाउंट नंबर जारी करने की घोषणा की गई है।

5. दीनदयाल उपाध्याय स्वनियोजन योजना

यह योजना उन लोगों को ध्यान में रखकर बनाई गई है जो स्वरोजगार यानी सेल्फ एंप्लॉयमेंट चाहते हैं ।कई लोग नौकरियों में समुचित नहीं बैठ पाते, इस वजह से सरकार ने स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए इस योजना का श्रीगणेश किया यह योजना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2016 में लांच की थी।

राज्य सरकार की योजनाएं

केंद्र सरकार की इन प्रमुख योजनाओं के साथ ही राज्य सरकार की योजनाएं भी इसमें शामिल है ।

इसमें पं० दीनदयाल ग्रामीण उद्योग रोजगार योजना, दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना, पं० दीनदयाल उपाध्याय स्वयं योजना, दीनदयाल उपाध्याय स्वरोजगार योजना, दीनदयाल उपाध्याय गृह आवास (होम स्टे) विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय किसान कल्याण योजना, दीनदयाल उपाध्याय वरिष्ठ नागरिक योजना आदि शामिल है।

शोध प्रविधियां

- इसमें ऐतिहासिक विधि में प्रयुक्त प्रायोगिक अभिकल्प की व्याख्या की गई है।
- ``इसके अंतर्गत विवरणात्मक विधि के द्वारा पुरुषार्थों का विवेचन किया गया है।
- इसमें सर्वेक्षण विधि को भी महत्व दिया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विचारको की दृष्टि में एकात्म मानववाद–सं० प्रभात झा
2. एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय – अमरजीत सिंह
3. दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वांग्मय खंड 5
4. दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वांग्मय खंड 12
5. भारतीय जनता पार्टी की गौरव गाथा – शांतनु गुप्ता
6. पं० दीनदयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचार– डॉ० महेश चंद्र शर्मा
7. पं० दीनदयाल उपाध्याय राजनीतिक चिंतन